विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ , लखीसराय
वर्ग - द्वितीय दिनांक :- 27/11/2020
विषय - सह - शैक्षणिक गतिविधि
एनसीईआरटी पर आधारित (कहानी)
लोमड़ी और लकड़हारा

एक बार एक लोमड़ी शिकारी से बचते-बचाते एक लकड़हारे के पास जा पहुँची। उसने लकड़हारे से विनती की,

“कृपा करके मुझे शिकारी से बचा लो। मैं तुम्हारी एहसानमंद रहूंगी।”

लकड़हारे ने लोमड़ी से अपनी झोपड़ी में छिप जाने को कहा। कुछ देर बाद शिकारी वहाँ आया और उसने लकड़हारे से लोमड़ी के बारे में पूछा तो लकड़हारे ने मुँह से तो ‘न’ कह दिया,

लेकिन उंगली से अपनी झोंपड़ी की तरफ इशारा कर दिया। शिकारी की समझ में कुछ नहीं आया और वह वहाँ से चला गया।

शिकारी के जाने के बाद लोमड़ी झोंपड़ी से बाहर आई और जाने लगी तो लकड़हारा बोला,

“मैंने तुम्हारी जान बचाई। कम से कम शुक्रिया तो अदा करती जाओ।” अच्छा! तुम तो विश्वासघाती हो।

मैंने तुम्हें झोंपड़ी की तरफ इशारा करते हुए देख लिया था। तुम जैसे व्यक्ति को धन्यवाद क्यों कहूँ?” यह कहकर लोमड़ी वहाँ से चली गई।

शिक्षा : हमें कभी भी दूसरों का विश्वास नहीं तोड़ना चाहिए।

****

ज्योति